

# वैदेही

माथिलीक सर्वोत्तम मासिक



Vaidehi  
25 N. P.

एक प्रति  
चारि  
आना

मार्च १९५८  
२५ नवका पैसा



प्रकाशनक दशम वर्ष

# वैदेही

अंक १२७

[ बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कालेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत ]

सम्पादक

प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा  
'सुमन'

भासुभाशु 'शेखर'  
चौधरी

प्रो० श्रीकृष्णकान्त  
मिश्र

एक प्रति २५

विशेषांक ५०

वार्षिक ३)

आजीवन ५१)

संस्कृत १२५)

श्रीकृष्णकान्तमिश्र  
द्वारा दरभंगा प्रेस  
कम्पनी (प्रा०) लि०  
दरभंगामे मुद्रित  
एवं प्रकाशित

प्राप्ति-स्थान  
वैदेही समिति,  
लालबाग, दरभंगा

कथा-प्रहसन

[ दू एश्य

। फूलक दाम

हफीम

श्रीगोवन्दचौधरी ८५

श्रीहंसराज ८६

श्रीराजकमल १०५

आलोचना—लेख

नाट्य-कला

फलेवार ओ/मंगरौनी

यौगिक उत्तराधिवार

श्रीधारेश्वरभा ८६

श्रीगिरिधरभा ११५

श्रीवेदानन्दभा १०५

कविता

ओ के ?

शिवरात्रि

प्रो० रमाकान्त ८४

श्रीश्यामबिहारादास ६४

मुख-चित्र: मिथिलाक प्रकाण्ड संस्कृत विद्वान राजपंडितश्रीबलदेवमिश्र-जानिक संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापनाक स्वप्न शीघ्रहि पूर्ण हैत ।

‘वैदेही-समिति’क संस्थापक एवं मंत्रीक एकमात्र कन्या कुमारि सुकन्या देवीक १५ - २ - ५८ कें प्रयागमध्य/आकस्मिक निधनसँ वैदेहीक ‘मार्च अक्क’क प्रकाशन एतेक विलम्बसँ भै रहल अछि । भगवान्सँ ओहि शोक - संतप्त परिवारक हेतु प्रार्थना अछि जे एहन महान् दुखकें सहन करबाक शक्ति प्रदान करथिन्ह ।



# ओ के ?

## प्रोफेसर श्रीरमाकान्त

रंग - महलक ध्वंशकारी ओ के छल,

जतै गीत गबैत छलौ—

हम - तौ, विषाद विहीन ?

जे, तोहर दरबज्जा बन्न क' देलक हमरा लेल ?

जे, तोरा, पवित्रात्मा केँ कएल कलंकित ?

जे, ओहि गीतकेँ मेटा देलक, जकरा हम तौ लिखइत छलौ—

कागत, कलम ओ मोइस बिना ?

जे, भग्न कएलक ओहि सेतुकेँ,

जाहि पर द'क' मिलन होइत छल -

हमर - तोहर ?

जे, प्रशान्त, पावैन, पवित्र स्वप्न - लोक सँ पटक देलक,

एहि कुत्सित, गर्हित भूमि पर ?

की भेलैक ओहि भग्न संसारक,

जे निष्प्राण अछि, मरल - हमरा लोकनिक अभावेँ

युग - युग सँ ?

ओ के छल ?



## दृश्य

### श्रीगोविन्दचौधरी

सन् वयालीसक १३ अगस्त ।

धुपछौहीवला दिन तथा गली - गलीमे धुमैत परिछाहीवाला राति । सम्पूर्ण भारत अकस्मात् उछलि पड़ल छल, आलस्यक चिरनिद्रा तोड़ि वर्तमानक अग्नि-क्षेत्रमे । अकस्मात् केयो अकर्मण्य बचि रहल छलाह जनिका घमनीमे रक्त - प्रवाह उत्तप्त नहि भय उठल हो । समग्र दिन जमघट छल गप्प हकनिहारक, राजनीति छटनिहारक तथा अन्धाधुन्ध उत्तेजित गला फाड़ि - फाड़ि निडर बननिहारक । जनताक बीच रातिमे जमघट छल । गली - गलीमे अपरिचित उत्तेजित नवयुवकक, चुप - चुप आगमन, कनफुसकी खानगी मे, संकेतहिमे गप्प । एहि सभमे सम्मिलित पुल तोड़ल जयबाक “ठक् ठक्” ध्वनि, गांगी - यमुनी तरंगक भाने दय रहलि छलि । दिनान्तमे कर्णगोचर भेल, उत्तेजित जनसमूहक सम्मिलित जयनाद “भारत आजाद” आर संगहि संग राइफलक गोलीक भीषण “ठाँय ठाँय” पुनः रात्रिमे सूनि पड़ल । स्थान-स्थान पर, एहिमे सम्मिलित होइ वा नहि एकर वाद-प्रतिवाद—पुनः गोरी सिपाहीक बूटक टाप—पुनः सर्वत्रनि स्तब्ध । हमर वकील मंडलीमे एक सदस्य नवे-नव आयल छलाह, लुक्खीसँ चंचल तथा विद्युत्सँ तेज । नव जोश, नवीन उत्साह ठाढ़ होथि जोरह करय त एँडी स टीक धरिक पसेना एक कय दम लेथि । उठथि बहस करय त “हौल्स-वरीज लौज आफ इंगलैण्ड” एहि शानसँ टेबुल पर पटक ओकर पन्ना चलटथि जे बाह रे वाह, हाकिम पर्यन्त दंग रहि जाथि । इजलासक पृष्ठभूमि मे बैसलि स्तब्ध जनता कनफुसकी करय लागय जे वाह, केहन तेज अरबी बछेड़ा अछि, एहन छार्दक मारलक जे ठाढ़ हयवाक त नामे नहि । देखू ने, हाकिमक त बोलती बन्द कय देलक । ई जरूर “जकसन” हैत गऽ । नाम छलैन्ह दिनकर, जाय दियऽ एहि सँ किछु विशेष मतलब नहि ।



१४ अगस्त ।

वकालतखानाक सरगर्मी देखबेक योग्य छल । भुएडक भुएड हिन्दूवर्गक वकील अयलाह अपन सादा वेशमे,—धोती-कुर्ता केवल मुँहपर बड़प्पन तथा त्यागक छाप एवं घृणाक व्यंग-पूर्ण हँसो मुसलमान वकीलक प्रति जे अपना के एहि आन्दोलनसँ तटस्थ रखने छलाह, पूर्ण आफीसियल लेबासमे आयल छलाह मानूँ यथा बद्ध परिकर होथि, जे अहाँ सभ जे करो, हम सभ वकालतखाना बन्द करय नहि देब, कचहरी जरूर आयल करब । अहाँक एहि बुलबुला सन जोशसँ हमरा सभकेँ कोनो मतलब नहि । साफ-साफ चुनौती छल—“हम सभ थोड़ छो तऽ की ? सरकारक संग छो तों सभ गीदर, हमर रोआँ भंग नहि कय सकैत छह ।” एम्हरुका सनसनी किछु एहि पैमाना पर चलि रहल छल जे ठंढा मस्तिष्क वला वयोवृद्ध ‘सीनियर’ अपन ‘आइस बैग’ नहि सटवितथि तँ पौने सोलह आना निश्चय जे ‘कम्यूनल एवार्ड तथा पाकिस्तानक फैसला’ एहि सिलसिलामे भय जाइत । सभ वकील सदस्य वकालतखानामे बैसलाह,—खिड़की द्वार बन्द कय—एहि बातक निर्णय करक हेतु जे देशक एहन परिस्थिति मे की कर्तव्य थीक । सहस्रक संख्यामे उत्तेजित जनता केवाड़क काँचस मुँह सटौने व्यर्थ प्रयासमे जुटल रहथि जै देवी बाबू एहिमे की बजैत छथि ? नवयुवकक चिनियाँ वादाम दल त आगाँ हैवे करत, भने लालबाबू आ मिस्टर प्रसाद वरन् एहिमे संग नहि देथि । हुनका त रायबहादुर हयवाक छन्हि ।

एम्हर ब्रजेश्वर बाबूक गरमागरम अंगार वरसि रहल छल, ओम्हर सरकारी वकील ( Public Prosecutor ) मिस्टर प्रसाद द्वार खोलि हौलमे प्रवेश कयलन्हि । थपड़ी पाड़ि हुनक व्यंग-पूर्ण स्वागत भेल परन्तु गरम दलक आहुतिमे गरम-गरम चीक सहयोग तखनि पड़ल जखनि मिस्टर प्रसाद ठाढ़ भय बड़े ‘पोज’ सँ बाजि उठलाह ‘हमहूँ तोहर संग छी । डेगभरि पाछाँ नहि ।’

वाक्य पूर्ण नहि भेल छल की एहि गड़गड़ी सँ वाह-वाही उठल की नहि छलाह महोदधि रत्नाकर, अन्यथा हुनको विवश भय स्तब्ध भय जाय पड़ि-तैन्हि ।

एहि वातावरणमे पाछाँ स केयो हमर कान्हक स्पर्श कैलक, हम जे थपड़ी पीटयमे व्यस्त छलहुँ, स्पर्शक अनुभव करितहि पाछाँ घुमलहुँ, देखी त हमर ‘नवीन वकील मित्र’ हमरा सँ किछु गुप्त परामर्श करय चाहैत छथि ।



भट्ट दऽ कुर्सी छाड़ि हम पाछाँ हटलहुँ, तथा पूर्ण गम्भीरतासँ अपन कान मित्रक मुँहलग सटा देन ।

‘देखू महाराज ! एहि गरम गरम स्पीच स किछु होवऽ जाय वाला नहि अछि, एखने त वस बेर आयल अछि ग्राममे कार्य्य करवाक । यदि ग्राम एहि युद्धमे सैनिक पूरा नहि करत त ई शहर लोकनि की खा कय लड़ताह ? हम त बुझैत छी जे...अँ...जे हमर एकमात्र कर्तव्य अछि जे ग्राम के युद्धमे अग्रसर करी । एहि संख्यामे सैनिक एकत्रित करी जे वस एकदि दिनमे अपन राज्य,...आ तखनि पुछबनि दाढ़ीबला सभ सँ जे आव कहह, केहन होइत छैक योगी सँ धुरखेड़ि ।

हम रही आवश्यकतासँ किछु विशेष कायर आ अनका टिटकारी भरयमे तेज । किछु गम्भीर मुख मुद्रा सँ समर्थन कैलहुँ—हँऽ हँऽ, अवश्य जाउ । कार्य्यो करव आ कहियो कहियो श्रीमतीजी सँ.....। धत्तेरी की अहाँ नहि चली त साफ कहू, वन्दो त विदा भेलाह ‘सरमे बान्ध कफन हाथमे झण्डा लेकर ।

अरे देखू तऽ एम्हरकी होइत छैक ? हम दिलचपी लैत बजलहुँ ।

अरे भले आदमी । एहिठाम की हैतैक ? देखू न, खाँवहादुर बाजि रहलाह अछि—आर दाढ़ी फरफरा रहलाह अछि, जेना हिनके दाढ़ी फरफरौला सँ स्वराज्य भेटयवाला हो ।

नहि नहि, सूनू सूनू । देखू आव ‘भोटिंग’ के बेर एलैक । हाथ त उठा दियौक ।

हमर मित्र आव आगाँ बढ़लाह, अपन दूनू हाथ उठौलन्हि, अनको हाथ उठा देखिन्ह जवर्दस्ती । बड़े नोंच खसोटक उपरान्त बहुमत सँ पास भेल, १५ दिनक हेतु कचहरीक सत्याग्रह, वकालत खाना वन्द ।

बाहरसँ नारा लागल, ‘भारत आजाद, इन्किलाव जिन्दावाद !! वकीलो lead करो !’ आर - आर हमरा देखैत देखैत हमर मित्र lead करवाक हेतु लक्ष लक्ष क लहराइत नरमुण्डक समुद्रमे कूदि पड़लाह ।

१९४४ क अगस्त—नहि जानि कोन दिन—आइ फेर वकालत खानाक चहल-पहल देखवाक योग्य छल । चिनियोबादाम दलक कतिपय उत्साही सदस्य-नवीनतम ‘सूट’मे लैस एम्हर सँ ओम्हर ‘कलक्टर साहब’क इजलासक



सन्मुख चक्कर लगा रहल छलाह । आँखि उत्सुकतापूर्ण प्रतीक्षामे शराबोर—  
कोनो परिचित सँ मिलतहि मानू कहि उठल हो जे हम त देखय आयल छी,  
जे आजुक 'इंटरभ्यू'मे कोन-कोन महात्मा पधारलन्हि अछि । एक वकील  
साहेब जनिक साथ पूणतया स्वेत भय चलल छलैन्ह तथा प्रायः दश वर्षसँ एहि  
वकालतखानाक कुरीक उड़ीससँ अपन नितम्ब केँ चालनि बनौने छलाह—  
अपन चुस्त पैजामा शेरवानी तथा एक हाथ नाम गांधी टोपीपर हुलसैत मानू  
कहि रहल होथि जे, 'अहाँ सभ व्यर्थ प्रयास कय रहल छी । ई 'सीट' हमर  
'रिजर्भ' अछि ।

एम्हर हमर नवीन मित्र अन्दाज लगा रहल छलाह, 'हमरा जे ब्लैक वर्न  
साहेबक सर्टीफिकेट अछि तकरा टक्करक सर्टीफिकेट त ककरो नहि हेतैन्ह ।  
आर महाराजा बनारसक सर्टीफिकेट त अवश्य count करतैक । 'मानुक  
साहेबक ऐकलौता'क हेतु चन्द्रनाथ बाबू कतबो जोर लगौथिन्ह किन्तु,  
हमर चालि आगाँ हुनकर की चलतैन्ह, एक बाद दोसरक नाम उच्चा-  
रित कैल गेल तथा सभ उम्मेदवार राजभक्तिक स्टाम्प अपना मुखड़ा पर  
स्पष्ट अंकित कैने साहेबक चैम्बरमे धड़कैत कलेजा सँ प्रवेश कयलन्हि । हमर  
नवीन मित्र जखनि ओहि कक्षमे प्रवेश करय लगलाह त हम पुछलियैन्ह—  
की मित्र ! ग्राहक युद्धमे अग्रसर करय नहि जायव । मारू गोली एहि  
पुलिसक चाकरीके, आहाँ कैँ कमी कोन बातक अछि ?  
हमर मित्र भट् दऽ हमर मुँह वन्द कय देलैन्ह, बजलाह,—आहाँ हमर हालति  
नहि जनैत छी । आर ओतहु सँ त राष्ट्रक उपकार कैल जा सकैछ ।  
हम अपन सन मुँह बना लेल, ओम्हर मित्र साहेबक कक्षमे प्रवेश कैलन्हि ।

—स्वजनपर जे तामस अबैछ ओकरा रोकवामे जय है । परजनपर तामस रोकक हेतु  
हेतु हम बाध्य भै जाइछी । ओहिमे जय केहन ?



श्रीधीरेश्वरभा 'धीरेन्द्र'

## नाट्य-कला

‘नाटक’ के शास्त्रकार लोकनि पंचम वेद कहि के अभिहित कैलन्हि अछि जकर जन्मे सर्वत्र सुलभताक दृष्टिसँ भेल छलैक । नाट्य कलाक लोक पर अत्यधिक प्रभाव पड़ैत छैक । वैदिक-युगसँ लए के एहि परिमाण युग धरि एहि साहित्यिक विधाक समान बनल रहल ।

लोकक हेतु, हितक भावना सँ, मानव जाहि भावके वाणीक माध्य द्वारा प्रकट करैछ, ओकरा साहित्य कहैत छैक । परन्तु अपन विस्तृत अर्थ के छोड़ि साहित्य जखन संकीर्ण अर्थमे प्रयुक्त होइछ तँ एकर अर्थ उपन्यास, गल्प, कविता आओर नाटक आदि साहित्यिक विधा द्वारा प्रकट कैल गेल भावसँ लेल जाइछ ।

साहित्यक-सृजनक मूलेमे लोक - हितक भावना अन्तर्हित रहैत छैक । अतः साहित्यिक विधा-सभक स्थानो लोके-हितक आधारपर निश्चित कैल जाइछ लोकोपयोगिताके साहित्यसँ हटाओल नहि जा सकैछ । जे साहित्यिक विधा लोकपर जतेक निधिक प्रभाव स्थापित करैछ ओकर स्थानो ओतबे उच्च होइत छैक । युगक अनुसार प्रभावोत्पादक दिशा परिवर्तित होइत रहैत छैक । जेना कोनो युगमे कविता प्रभावोत्पादनक दृष्टिसँ सर्व श्रेष्ठ बुझल जाइत छल; परन्तु आइ ओकर स्थान उपन्यास तथा गल्प लए लेलकैक अछि । यद्यपि किछु विषय एहेन होइछ जकर मान सर्वदा समान बनल रहैत छैक आओर नाट्य-कलाक एक एहेन वस्तु थिक । ‘नाटक’ के शास्त्रकार लोकनि ‘पंचम-वेद’ कहि के अभिहित कैलन्हि अछि, जकर जन्मे सर्व-सुलभताक दृष्टि सँ भेल छलैक । नाट्य-कलाक लोकपर अत्यधिक प्रभाव पड़ैत छैक । वैदिक-युगसँ लए के एहि परिमाण-युग तक एहि साहित्यिक-विधाक समान महत्व बनल रहल ।

नाटकक गणना शास्त्रज्ञ लोकनि दृश्य-काव्यक श्रृंखलामे कैलन्हि अछि । क्येक तँ एकर रसास्वादन चक्षुएक द्वारा कैल जाइछ । ओना पूछल जाए तँ एहिमे श्रव्य-काव्यक तत्व निहित रहैत छैक । यह क्येक शिल्प, मूर्ति, चित्र आओर संगीत कला एहिसँ आविके मिलि जाइछ । साहित्यक ई विधा



ओकर अन्य विधासँ कतेक वेशी पूर्ण अछि; नाटकक दृश्य नेत्रक द्वारा अन्तर-  
चक्षुपर प्रभाव दैछ, नाटकक संगीत कर्ण-रन्ध्रसँ टकराकेँ मानसमे दिहलोल  
उत्पन्न करैछ तथा नाटकक वार्त्ता मस्तिष्ककेँ आन्दोलित कए ब्रह्मानन्द रसक  
कारणमे सहायक होइछ । नाट्यकला सभसँ प्रभावशाली कला थिक ।

नाट्य-शास्त्री लोकनिक मतेँ नाटकक छः तत्व प्रधान होइछ—(१) वस्तु(२)  
पात्र (३) कथनोपकथन (४) देशकाल (५) शैली आओर (६) उद्देश्य । एही  
छबो अंगक संयोगसँ 'नाटक'-रूपी शरीरक निर्माण होइछ ।

(१) वस्तुः—वस्तुक अर्थ कथानक होइछ । नाटकक हेतु कोनो कथानक चुनल  
जा सकैछ, किन्तु ओकर नाटकीय रहब सफलताक दृष्टिसँ आवश्यक छैक ।  
कथानकक दुइ प्रभाग होइछ—(i) प्रमुख आओर (ii) प्रासङ्गिक । उदाहरण-  
स्वरूप हिन्दी-संसारक अन्यतम नाटककार स्वर्गीय जयशङ्कर प्रसादक प्रसिद्ध  
'नाटक' सम्राट चन्द्रगुप्तमे चन्द्रगुप्तक कथाक अतिरिक्त सिंहरण, पर्वतेश्वर,  
सिकन्दर एवं कल्याणी आदिक प्रासङ्गिक कथा चल ऐल छैक । अतः चन्द्रगुप्तक  
कथा प्रमुख भेल तथा आन कथा सभ प्रासङ्गिक कथानकक चुस्त आओर ठीक  
रहनाइ आवश्यक छैक तथा एहि दृष्टिकोणक अनुसार अत्यधिक प्रासङ्गिक कथा  
नाटककेँ क्षतियो पहुँचा सकैत छैक जेना ओ 'सम्राट चन्द्रगुप्त'मे पहुँचौलकैक  
अछि । कलाक दृष्टिसँ कथानकक संगठित रहनाइ परमावश्यक छैक । प्रमुख  
कथाकेँ पूर्ण करवेक हेतु प्रासङ्गिक कथा सभकेँ अनबाक चाही । कथाक  
प्रारम्भकेँ 'बीज' कहैत छैक तथा अन्तकेँ 'कार्य' । 'बीज' सँ लए केँ  
कार्य धरि संघर्षक तीन अवस्था होइछ (i) विन्दु (ii) पताका आओर (iii)  
'प्रकरी' । 'विन्दु' कथाक बीजक अंकुर होइछ तथा ई अन्त धरि कनिये-  
कनिये बुद्धिमान होइत विद्यमान रहैछ । प्रासङ्गिक कथा सभमेसँ प्रमुख कथा  
केँ पताका कहैत छैक तथा प्रमुख कथोक भीतरिक लघु-कथा 'प्रकरी' नाम सँ  
सम्बोधित कैल जाइछ । नाटकीय गतिक अनुसार नाटकक पाँच भाग होइछ  
—(i) प्रारम्भ (ii) प्रयत्न (iii) प्राप्त्याश (iv) नियताप्ति आओर (v) फला-  
गम । 'प्रारम्भसँ' फलागम धरि पहुँचबाक हेतु 'प्रयत्न'क आवश्यकता  
होइछ तथा प्रयत्नक प्रसंगमे अनेक संघर्षक पश्चात् फल-प्राप्तिक आशा  
दृष्टिगोचर होमए लगैछ । एकरे प्राप्त्याशा कहैत छैक । एकर बादो संघर्ष रहिते  
छैक आओर जखनि फल-प्राप्तिक आशा दृढ़ भए जाइछ तँ ओकरा नियताप्ति  
कहैत छैक । सभक अन्तमे फल अवैछ जकरा संग नाटकक अन्त भए जाइछ ।  
अभिनयक दृष्टिसँ नाटकक सम्पूर्ण कथाक दू भेद होइछ (i) दृश्य आओर  
(ii) सूच्य जाहि विषयकेँ अभिनयक समय रंगमंचपर देखाओल जएबाक



चाही ओकरा दृश्य कहैत छैक तथा जकर सूचना मात्र द देवाक चाही ओकर सूच्य । भारतीय दृष्टिकोणसँ प्रणय, चुम्बन, मृत्यु, आत्महत्या, स्नान आदि क्रियाक रंग-मंच पर देखावए निषिद्ध अछि अतः एकरा सभक सूचना मात्र दए देल जाइछ । यद्यपि ई विचार-धारा आव पश्चिमीय-संसर्ग प्रमुखतः 'इत्सनक' परिचयसँ समाप्तप्रायः भए गेल अछि । उपर्युक्त 'सम्राट चन्द्रगुप्त' एकर बढ़िया उदाहरण थिक । भारतीय शास्त्रकार लोकनि नाटकक कार्यो धरि केँ विभाजित कए देने छथि । एहि आधारपर नाटकक पात्र सम्पूर्ण कार्यकेँ आंगिक अर्थात् अभिनय वाचिक अर्थात् कथनोपकथन आहार्य अर्थात् वेष-भूषा तथा सात्विक अर्थात् हास्य-रुदन आदिक द्वारा करैत छथि ।

(२) पात्र—नाटकमे पात्र बहु प्रधान होइछ क्यैक तँ नाटकक कथा-लेखकक द्वारा नहि कहल जा सकैछ अतएव पात्र सभक क्रिया तथा हुनका लोकनिक कथनोपकथन अभिव्यक्तिक साधन होइछ । यथार्थमे पात्रक चरित्र नाटक मे देखाओल जाइछ । नाटककारकेँ पात्र सभ पर सतर्क दृष्टि राखय पड़ैत छैक नाटकमे मात्र वैह पात्र उपस्थित कैत जाइछ जकर कथानकक जन्म देनाइ वा ओकरा आगू बढ़एवामे स्थान होइछ । प्रमुख-पात्रकेँ 'नायक' कहैत छैक नायकक पत्नी प्रेमिका वा ओहने प्रमुख महिलाकेँ 'नायिका' । यथार्थमे नाटक जीवनक चित्र थिक आओर जेना कोनो पुरुषक जीवनमे एक प्रधान स्त्री अवैछ तथा ओकरा संग सामाजिक जन्तु रहवाक कारण आन पुरुष तथा स्त्री ताही तरहें नाटको मे होइछ । 'नायक' आओर 'नायिका'क अतिरिक्त अन्य पात्रोक समुचित प्रवेश होइछ तथा ओ लोकनि अपन-अपन कार्य करैत छथि । कलाक दृष्टिसँ अन्य पात्रमे वैह-टा पात्र आनल जाइछ जकर प्रमुख कथाक प्रधान अंग नायक तथा नायिकासँ सम्बन्ध रहैछ । बहुधा नायक वा नायिकाक चरित्र केँ आगाँ बढ़एवाक हेतु दोसरा ओहने प्रमुख नायक सम्मुख अवैछ वा ओहने प्रधान नायिका सोझाँ मे आनल जाइछ । एहन नायककेँ 'खल नायक' तथा एहन नायिका केँ 'खल नायिका' कहैत छैक । नायक आओर नायिका संग खल नायक आओर खल-नायिकाक संघर्ष होइछ । जाहिसँ कथानकमे निखार अवैछ ।

(३) कथनोपकथन—कथनोपकथने ओ वस्तु थिक जाहि द्वारा नाटकक कथा स्पष्ट होइछ । कथनोपकथनक व्यवहारानुकूल भाव व्यंजक तथा चुस्त



है व जरूरी हैक । एकर प्रमुख कार्य कथानकके विस्तार देनाइ, ओकरा संयत केनाइ तथा ओकरा उत्कर्ष साधन भेनाइ थिक । कथनोपकथनक भाषाके सजीव, शिष्ट, स्वाभाविक, संयत तथा गम्भीर हैवाक चाही । उपन्यास आओर नाटकक कथनोपकथनमे अन्तर होइछ । उपन्यासकार अपन कथनोपकथनके विस्तार दैछ, परन्तु नाटककारके एक निश्चित सीमाक भीतरे शिष्ट तथा संयत वाक्यमे सभ किछु कहि देवए पड़ैत छैक । नाटकीय कथनोपकथन मे औत्सुक्यक मात्रा अधिक होइछ । एकर संकेतपूर्ण एवं ध्वन्यात्मक हैव नीक थिक ।

(४) देश-काल—देश-कालो नाटकक एक परम प्रमुख तत्व थिक । नाटक किएको जीवनक चित्र थिक अतः स्वाभाविकताक दृष्टिसँ ओहि कालोक यथार्थ प्रतिनिधित्व हैवाक चाही, जाहि कालक कथा रहैछ । यथार्थ प्रतिनिधित्वक अर्थ होइछ कथित कथाक वातावरणक यथार्थ चित्रण । रहन-सहन, वेष-भूषा धार्मिक दृष्टिकोण आओर राजनैतिक विचार-धाराक स्पष्ट उल्लेखे देशकालक सफलताक हेतु अपेक्षित अछि । जयशङ्कर प्रसादक 'सम्राट चन्द्रगुप्त' एकर सुन्दर उदाहरण थिक । एहि नाटकमे देशकालक एतेक ध्यान राखल गेल छैक जे पाठक वा दर्शकके बोध होमए लगैत छैक जे ओ प्राचीन भारतक ओही युगमे पहुँचि गेल अछि । देश-कालक रक्षाक हेतु नाटककार खैबा-पीवाक पहिरवा ओढ़वाक तथा विचार-धाराक स्थान-स्थान पर उल्लेख कए दैछ नाटकक पात्र, देश कालके स्पष्ट कए दैछ । खास समयमे प्रचलित शब्दो देशकालक सफलतामे बड्ड सहायक होइछ, जेना 'सम्राट चन्द्रगुप्त' क सोमन्त दौवारिक आदि शब्द तत्कालीन विचारधाराक स्पष्टोकरण पात्र लोकनिक कथनोपकथनक द्वारा भए जाइछ । देशकालक विरुद्ध एक्को टा वस्तु नाटकके मटियामेट करवाक हेतु पर्याप्त होइछ । उदाहरणस्वरूप यदि अशोककालीन नाटकमे विजली-बत्तीक चर्चा कए देल जाए वा वर्तमान भारतक कोनो नाटकमे दीप-दंडपर शत वर्तिका दीपक जरौनाइ देलाओल जाइक अथवा अशोकके चश्मा पहिरा देल जाइ तथा कोनो प्राध्यापकके जे आधुनिक कोनो विद्यालयमे पढ़वाक कार्य करैत हो बगलबन्दी पहिरने देखा देल जाइक तँ निश्चित रूपेण ओहि अशोकके देखिके कुरुर भूक्त तथा प्राध्यापकजीके लोक अद्भुतागार लए के विदा हैतन्हि । अतः देशकालक प्रसङ्गमे पूर्ण सत-



कता अपेक्षित छैक । नाटककारक साहित्य साधनाक एहिसँ पर्याप्त परिचय भेटैछ ।

(५) शैली— शैलीक प्रसङ्गमे ओना कहल गेल छैक जे ओ कृतिकारक व्यक्तित्वक दोसर रूप थिक; परन्तु जतै धरि नाटकीय शैलीक प्रश्न अछि ; ई दोसर वस्तु थिक । नाट्य-कलो यथार्थ एक एहन कला थिक जाहिमे लेखक बहुत किछु शास्त्रीय बन्धनसँ बन्धल रहैत अछि । नाटक एक दृश्य-काव्य थिक आओर लेखककेँ सर्वदा ई ध्यान राखए पड़ैत छैक जे ओकरा नाटकमे दृश्य-काव्यक विरोधी तत्व ने आवि जाइक । ओ एको टा दृश्य, एको टा प्रसङ्ग एहन नहि आनि सकैछ जकर रंग - मंचपर अभिनय नहि भए सकै । एही प्रकारेँ ओ पैघ-पैघ वक्तव्य, दोर्घ-गीत एवं नीरस पात्रोकेँ अपन कृतिमे नहि पैसए देतैक । सत्यतः नाटकीय शैलीक दोसर नाम 'अभिनयशीलता' थिकै । कथानक त्रिकोणात्मक भेनाइ, वाक्यक गीतक उप युक्तता एवं दृश्यक सुलभता अनायासे नायककेँ अभिनेय बना दैछ । सफल नाटककार अपन नाटकमे उपर्युक्त तत्व सभक युक्तियुक्त समावेश करैछ । तथा प्रारम्भसँ लएकेँ फलागम धरि तथ्यकेँ एक औत्सुक्यपूर्ण एवं लाक्षणिक ढंग स राखि महान् कृतिक सृजन करैछ ।

(६) उद्देश्य — नाटकक सभसँ प्रमुख आओर अन्तिम तत्व थिक उद्देश्य । कोनो कृतिक पाछाँ कृतिकारक किछु ने किछु उद्देश्य रहैछ क्यैक तँ कला निरुद्देश्य भैये ने सकैछ । नाट्य-रचनोक पाछाँ यह उद्देश्य रहैत छैक । परन्तु नाटककारक कुशलता अपन उद्देश्य केँ खुजल रूपमे राखि देबामे नहि छैक प्रत्युत कौशलसँ कथाकेँ कनिये-कनिये आगाँ बढ़ाकेँ उद्देश्य धरि पहुँचवा मे छैक । यथार्थमे उद्देश्य धरि पहुँचवेक दोसर नाम फलागम थिक । कोनो नाटकक सफलताक हेतु उपर्युक्त तत्वपर ध्यान राखब परमावश्यक अछि संगहि संग नाटकक एक अंगक ओकर दोसरा अंगसँ एहन सम्बद्धता अपेक्षित छैक जाहिसँ सम्पूर्ण नाटकमे एकताक स्थापना भए सकै ।



# शिवरात्रि

श्रीश्यामविद्यारोदास 'नवानी'

छल मास म घट

आर दिन शिव-रात्रि छल शिव के' अराधक ।

लोक सब मेला चलल छल

बाल, वृद्ध, वयस्क हिलिमिलि

टोल-टोलक, घर-घरक ।

घोषक तरक पर्यंत जे छलि सुन्दरी पोसलि दुलारक ।

बा कि जनिका छलनि किछु

तनरूप, यौवन सम्पदा देखक देखाबक ।

से घरी भरि रातियहिं सँ

सखि जुटा बैसलि छली गुलगुल मचाबति ।

जयवाक हेतु विलम्बसँ छलि कछमछाइत ।

बैसथि, उठथि बाहर तकथि,

देखथि ने ककरो बाट जाइत ।

बात पर खउँ भा उठथि, अभरण उतारथि,

कहथि भै गेल भोर क्यो दरशन की पाउति ?

किन्तु छलि एक षोड़सी नहि उर्वशी छलि ।

कविक कल्पित नारि किन्तु कुमारि पर

कमनीयता बैसल हँसै छलि ।

जेहि क्षेत्रमे नहि चेतना,

जग मूक परमानन्द विस्मृतिमे पड़ल अछि ।

नहि जकर उपमा, न रूप,

प्रत्यक्ष, किन्तु आधार टा अछि ।

तन्मय तकर शृंगार मे परिवार भरि छल ।

जकरा सँ लज्जित छल बसन भेल मूक,

बास निरूप, कंचन काठ सन छल ।



से निकलि आइलि छार मे  
 तुरत दिनकर दौड़ि आयल ।  
 जोड़ि कर वरदान पाओल, श्री लुटाओल ।  
 कंचनक निज करसँ भरि भरि थार ।  
 सगरो बारि, झाड़ि, दुआरि, खेत पथार ।  
 से सरल हृदया हँसलि,  
 दस दिश हँसल, जग प्राण पावोल ।  
 जगक म्लेच्छ कुहेश भागल ।  
 रूप-वदन मे चठल ठकबक सकल संसार ।  
 आर कहि जग-मंगला ! जग-मंगला !!  
 नूपुर कयल मंकार ।

से बढ़लि छलि जा रहलि  
 चत्कर्ष आगौं जा रहल छल ।  
 छल जतय स्वागत मे आठो सिद्धि नव निधि  
 वन मे अमरावति बसाओल ।  
 आर संगहि जा रहल छल ।  
 अहोभाग्य मना रहल छल ।  
 को पुरुष की नारि कहु  
 जकरहिं भरोसे जग चकराय से मंगलक दातार  
 शिव कहु पौरुषक संसार  
 अपनहि मनोरथ मे डुबल  
 संहार शृष्टिक भेद सँ बोहि पार ।

यौवनक संसार मे छल मचि रहल जयकार श्री के ।  
 के सुनै छल छोड़ि से पुनि भावना किछु आन जी के  
 की कहू वो नारि छी ? पौरुष जकर अछि दास वो पुनि  
 'हम पुरुष छी' की तकर अछि अर्थ पारा पास से गुनि ?  
 हमहूँ छलहूँ तेहि ठाम देखल  
 एक मे सब विश्व छल वा विश्व मे से एक एकसरि बाम  
 माथा झुकल मुंहसँ निकलि गेल 'आदि शक्ति प्रणाम'  
 पूरथु गौरि शिव मनकाम ।



## फूलक दाम

सोचल एकर बड़ कष्टक अर्जित एक शिलिंग फिरा दिअइक, कहि दिअइ जे हमर देश मे फूल सर्वत्र अजस्र मात्र मे विनु कइआक भेटइ छइ मुदा ई जे त्यागक एक आनन्द छइ ताहिसँ एकरा वंचित नइ करी । बड्ड कष्ट अर्जित एहि शिलिंगक द्वारा जे सुख स्वच्छन्दता भ' सकइए, ओकरा प्रेमक नाओ पर समर्पण करबालए प्रस्तुत अछि । एहिसँ एकर हृदय कतेक शीतल हेतइ । एहिसँ वंचित कएला सँ कोन फल । हम शिलिंगक फूल कीनि तोहर भाइक समाधि सजा देबउक ।

लन्दन शहरमे डेग-डेग पर निरामिष भोजनालय छइक । नेशनल गैलरीमे घुमलाक बाद एक निरामिष भोजनालय प्रवेश कएल । भोजनक हेतु अमल । दुइ - चारि भूखल व्यक्ति एम्हर-ओम्हर बइस खाइत । हम कुर्सीपर दैनिक समाचार-पत्र हाथकेँ लेल कि नम्रमुखी 'वेट्रेस' सम्मुख आबि ठाढ़ि । स्वाद्यतालिका देखि आर्डर देल तँ 'धन्यवाद महोशय' कहि 'द्रुतगामिनी' चलि गेल ।

तत्क्षण, अपन टेबुलसँ किछुए दूर एक अंगरेज बालिकाकेँ देखल । हमर नजरि पड़ितइ ओ अपन नजरि हटा लेलक मुदा ताहिसँ पूर्व ओ हमरा बेस गहीर भ' क देखइत छलि । श्वेतद्वीपमे हमर चमत्कारिक रंड जन-साधारणकेँ सर्वत्र मुग्ध करइ छल, तँ ध्यान थोड़ दिअइक ।

बालिकाक वएस तेरह - चउदह हेतइक । भेषे गरीब बुझना जाइत । केस पीठ पर एम्हर - ओम्हर छिड़िअएल । आँखि पइघ - पइघ अवश्य किन्तु वेदनायुक्त ।

ओकर आँखिसँ बचि हम चुपचाप बइसल छलहुँ । हमर भोजन अएबासँ पूर्व ओ खा' क' उठि गेलि । ओकरा उठइत हमर नजरि अनुसरण कएलक । ओ 'मिस'सँ किछु हमरा दिस संकेत क' पुछलक आ किछु गप्प क चलि गेलि । हम खा केँ 'वेट्रेस' सँ ओहि बालिकाक प्रति जिज्ञासा कएल । एतबा बुझल



भेल जे प्रत्येक शनिके भोजन खेवाले अबइए—मासिक कोनो दोकान मे नोकरी करइए—साप्ताहिक वेतन पओलासँ एतए भोजन खाइए ।  
गप्प युक्तिगार बुझि पड़ल ।

बालिकाक सम्बन्धमे कौतुहल बढ़ल गेल । सप्ताह दिन बीतल शनि आएल हम ओही निरामिष भोजनालयमे निर्दिष्ट समयपर पहुँचलउँ । देखल जे ओ ओही टेबुलपर खा रहलए । हम ओकर आगाँक कुरसीपर बइसत कहल—  
गुड आफटर नून ।

गुड आफटर नून । —संकोचक संग उत्तर देलक ।

कनिबें मे हम गप्पक जाल बिछा देल तँ ओ पूछि बइसल—अहाँ भार-  
तीय छी ?

हँ ।

• माफ करब, तँ की अहाँ निरामिष भोजी छी ?  
से कियेक ?

• हमरा सुनल अछि जे अधिकांश भारतीय निरामिष भोजी होइत छथि,  
हमर जेठ भाए भारत सैनिक मे भर्ती भ' क' गेल छथि । तँ ई बुझल अछि ।  
प्रकृततः तँ नइ, तखन कखनहुँ क निरामिष भोजन अवश्य पसिन्द  
करइछी ।

एहिना गप्पक क्रम बढ़ल गेल—बुझल भेल जे ई लैम्बेथ मे अपन वृद्धा  
माताक सङ रहइए ।

—पत्रादि व्यवहार तँ भाइ साहब सँ हएत ?

—हँ, एहि बीचमे बहुत दिनसँ कोनो खबरि नइ अछि—हमर भाए बहुत  
चिन्तित अछि । सुनइ छिअइ जे ओतए साँप, बाघ आ ज्वरक बड़ उपद्रव  
छइ, से सत्ते ?

—नइ कोनो तेहन नइ; आखिर लोक तँ रहितइएँ ।

बालिका एक दीर्घ साँस छोड़ि बाजलि— हमर भाए कहने अछि जे कोनो  
भारतीय सँ गप्प होइत तँ करितउँ ... ।

हम ओकर मूक - अनुरोध बुझल । दीन, विरह, कातर जननीक भेंट करबाक  
उत्सुकता भेल । दरिद्र खोपड़ीक प्रत्यक्ष परिचयक अवसर नइ भेल छल ।

हम कहल—चलू, हम अहाँक भाइक भेंट करब । हमरा हुनकासँ परिचय  
करा देब ।



भरतान सुनितहुँ बालिकाक कृतज्ञतासँ सजल भ' गेल, पूछि कहसलि—तँ की  
 अपने चलि सकइ छी ?  
 सुसी सँ ।

भोजन कए हम दुनू गोटे बिदा भ गेलउँ । रास्तामे हम पूछल—की हम  
 अहाँक नाओ बुझि सकइ छी ?

हमर नाओ एलिस मार्गरेट क्लिफोर्ड थीक ।

गप्प करइत सेन्ट मार्टिन्स चर्च लग होयत चेयरिंग कास स्टेशनक सोफे  
 पहुँचि गेलउँ । टेलीग्राफ आफिसक आगाँ फुटपाथपर जाक' हम कहल—  
 एतए कने वेस्टमिनिस्टर बसक प्रतीक्षा करी ।

—एहिना चलबामे आपत्ति अछि की ?

—नइ, मुदा अहीं केँ कष्ट ने हुअए ।

—न, हम तँ नित्त अबइ छी ।

—से किएSS ?

—हम सिविल - सर्विस - स्टोर्स मे टाइप-राइटिंग क काज करइ छी । नित्त  
 सौँझ केँ घुइ छी । आइ शनि थिकइ ने, तए सबेरे छुट्टी भ गेल ।

हम भीतरे - भीतर एहि अशिक्षता दरिद्रा बालिकाक आगाँ पराजित भेल  
 जा रहल छलहुँ; अंगरेज जातिक सौन्दर्य - प्रियताक आगाँ हमर ई आत्म  
 पराजय प्रथम नइ छल । गप्प करइत वेस्टमिनिस्टर पुल लग पहुँच गेलउँ  
 त हम पुछल—हम अहाँकेँ एलिस कहू वा मिस क्लिफोर्ड ?

ओ विहुँसइत उत्तर देलक—ओना तँ हम एखन धरि समर्थि नइ भेलउँएः

—अहाँ नाओँ कहि सकइ छी, मुदा लोक हमरा मेगी कहइए ।

—अहाँ समर्थि हेवालय उत्कंठित छी ?

—हँ ?

—किएक ?

—कारण ई ई अधिक धनोपार्जन कए सकब, माए आव बड़ बूढ़ि भ गेलिए ।

—वर्तमान काज मनोनुकूल नइ अछि ?

—न, मसीन जकाँ काज करइए, हम सेक्रेटरीक मानसिक काजक इच्छुक छी ।  
 आव हम दुनूगोटे लम्बेथक एक गरीब गाम मे आबि गेलउँ ।

—हमरा सुनल अछि जे भारत मे एहनो लोक छथि जे अलौकिक कार्य के  
 देखबइ छथि—ओ योगी कहबइ छथि । अहाँ तँ योगी नइ छी ?



—योगी मांस - भक्षण नइ करइ छथि ।

—ओ' तइ छलउँ जे हम निरामिष भोजी छी की नइ ।  
ओ हँसए लागलि ।

हमरा लोकनि एक संकीर्ण ओसरा पर पहुँचलउँ तँ जेब सँ लैच - की (Latch-key) बहारकऽ मेगी केवाड़ खोललक ।

कोठलीमे प्रवेश कए मेगी केवाड़ बन्द कएलक आ माएकेँ सोर कऽ केँ कहलक—माँ ! कने एम्हर आ तऽ ।

—भनसा घर मे छी, एम्हर आ ।

भारतक एक गोट सज्जन तोहर भेंट करए अयलथुन्हें ।

—के थिकाह ?

मेगी सङ्ग भनसा घर प्रवेश कएल ।

—ई मिस्टर गुप्त आ' हमर माए !

हम हाथ बढ़ाओल किन्तु—रूमा करब, एखन हमर हाथ मइल अछि ।

मिसेज क्लिफर्ड जबाब देल । देखल हाथ मे मेदा लागल छल ।

पुनः कहए लागलि—बुझल आइ शनि थिकइ, केक बना रहल छी । राति धरि बिका जाएत, एहिना हम कठिनतासँ जीवन - निर्वाह करइ छी ।

डेसर पर मेदा, चर्बी, किशमिश आ अण्डा आदि केक बनेबाक सामग्री राखल छल ।

मिसेज क्लिफर्ड कहल—हमर कार्य समाप्त-प्राय अछि । मेगी ! हिनका घरमे बइसा, हम चल अबइ छी ।

नइ, नइ, हम बढिआँ छी । अरे, अहाँ केक नीक बनबइ छी ।

मिसेज क्लिफर्ड सस्मित मुखें धन्यवाद देल । मेगी कहल—आ टॉफी माँ नीक बनबइए, कने चिखबइ ?

हमर स्वीकृत-संकेत बूझि मेगी एक टीन आगाँ क' देलक । हम खा क प्रशन्सा कएल । केक बनबैत मिसेज क्लिफर्ड पूछल—महाशय ! भारतवर्ष केहन देश अछि ?

—सुन्दर देश अछि ।

—निवास निरापद अछि ?



—हँ, हँ, एकदम निरापद । मुदा एतऽ जकाँ ठंढा नइ, कने गरम ।

—साँप आ बाघ बड़ छइ ? ओ तँ लोककेँ कष्ट दइत हेतइ ?

—अरे साँप आ बाघ त जंगल मे रहइ छइ ।

—आ ज्वर ?

—हँ, ज्वर भारत मे कतउ - कतउ बेसी होइ छइ मुदा सर्वत्र सभ समय नइ ।

—हमर बेटा पंजाबमे सैनिक अछि । पंजाब केहन देश अछि ?

—ई बुझि हम प्रसन्न छी । मेगी ! तों मिस्टर गुप्तकेँ बइसक घर लऽ चल, हम चल, चाह नेने चल अबइ छी । केक बनाओल भ गेल ।

मेगीक सङ्ग हम बइसक मे जा बइसलउँ । कोठलीक सभ वस्तु साधारण दामक छल । कनिबें नइ कि मिसेज क्लिफर्ड चाह ल उपस्थित । चाहक सङ्ग गप्प ससरल ।

ओ अपन बेटाक फोटोग्राफ देखओलक । तखन एक अउँठी देखाओल तँ मेगी बाजि उठल—ई जादूक अउँठी छिअइ, मिस्टर गुप्त । मायकेँ एक योगी देलकन्हि । अहाँ एकरा सँ भूत-भविष्यक गप्प बुझि सकैत छी ?

मेगीक भाइक नाओ फ्रैंक रहइ । ओ एहि अउँठीक प्रसङ्ग लिखने रहइ जे संयमपूर्वक पूछलासँ ई तीनू कालक गप्प कहि सकइछ । भाइक कोनो समाचार नइ पा ओ पूछने छलि मुदा जबाब किछु नइ पउने छलि ।

ओ कहलक जे हम हिन्दू छी । सम्भव थोक जे सफल भ सकी । हम कने आगू पाछू विचारि अउँठी हाथ केँ लेल, आ ई कहि फिरा देल जे हम तँ किछु नइ बुझइ छिअइ ।

हम गप्प बढ़वइत पूछल—मेगी ! ई सारंगी तोरइ थिकउ ?

हँ, हँ, मेगी एकरा नीक बजवइए ! किछु सुना दहून मेगी । माइक दिस शेषपूर्ण आँखि क 'ओह मद'र ।

मेगी ! कने बजा ने । सारंगीक स्वर हम बड़ पसिन्द करइछी ।

हम जेहन बजवैछी से प्रायः अहाँकेँ पसिन्द नहि हएत ।

अन्तमे मेगी सारंगी बजओलक । हम धन्यवाद दइत प्रशन्सा कएल । मिसेज क्लिफर्ड कहल—कहल मेगी एखन धरि उपयुक्त शिक्षा नइ पा सकलिअए, जे किछु सिखलक अछि अपन पारश्रमक बले ।



—ई सभ अपनइ सोख नेने छी ।’

—नइ, नइ गिरजाक मिनिस्टरक बेटी सँ सिखल अछि ।

तकर बाद हम Merchant of Venice ( वेनिसक सौदागर ) क अभिनय देखबाक आप्रह कएल तँ मिसेज क्लिफर्ड सधन्यवाद अपन स्वीकृति प्रदान कएल किन्तु अग्रिम शनिकेँ जाएब, ई निश्चय भ’ क’ रहल आ हम बिदा ल’ चल अएलउँ ।

सोमदिन हम लाइसोयसक बॉक्स आफिस जा क’ अग्रिम शनिक अपर सर्किलक तीन गोटा टिकट मञ्जलिअइ । अग्रिम दुइ शनि परिक टिकट बिषा गेल रहइ तँ हम तेसर शनिक हेतु प्लान हाथ मे ल’ रिक्त स्थानमे सँ एक स्थानक परस्पर संलग्न तीन टिकट कोनि चल अएलउँ ।

एवम् क्रमें तीन मास बीत गेल । एहि बीचमे मेगी आ मिसेज क्लिफर्ड सँ कएक बेर भेट भेल किन्तु एखल धरि फ्रैंक क कोनो समाचार नइ छल ।

एक दिन हम मिसेज क्लिफर्ड क अनुरोधसँ इण्डिया ऑफिस मे जा पता लगाओल । बुझल भेल जे जगह रेजीमेन्ट मे फ्रैंक अछि से सम्प्रति सीमान्त समरमे संलग्न अछि । एहि समाचारसँ मिसेज क्लिफर्ड आर विशेष चिन्तित भ गेली ।

एक दिन भोरे एक पोस्टकार्ड भेटल :

‘प्रिय मिस्टर गुप्त !

हमर माँ बड़ दुखित अछि । हम आइ सप्ताह दिन सँ अपन काज पर नइ गेलउअँ । जँ एक बेर एतए अएबाक कष्ट करितउँ तँ हम अधिक उपकृत हएब ।

—मेगी

पनपिआइ कएलाक बाद हम लैम्बेथ केँ बिदा भेलउँ । मेगीक दुआरि पर पहुँचि खटखटाओल तँ केवाड़ खोललक । महा उदास छलि-आँखि धसि गेल छलइ ।

—ओह ! थैंक यू मिस्टर गुप्त ! इट इज सो काइन्ड ।

—तोहर माँ कोना छथुन्ह ?

—एखन सूतल अछि; बड़ दुखित अछि । डाक्टर कहइ छथि जे फ्रैंक क चिन्तासँ रोग बढ़ल जाइछन्हि । आव ई नइ जीअत ।

हम मेगीकेँ सान्त्वना देल आ’ अपन रुमालसँ ओकर आँखि पोछि देल तँ मेगी किछु शान्त होइत कहलक—



—हम अहाँ सँ एक भित्ता मझइ छी ।

— की ?

— बइसक चलू तँ कहइ छी ।

हमरा लोकनि सतर्कतासँ बइसक घर आवि गेलहुँ तँ हम पूछल—अच्छा, आव मेगी ?

मेगी किछु काल निनिमेष दृष्टिबेँ हमरा दिस देखइत रहलि आ हम प्रतीक्षा करइत छलउँ मुदा अन्तमे ओ विना किछु बजने दुनू हाथें अपन मुँह काँपि लेलक ।

हम महा विचित्र परिस्थितिमे पड़लउँ जे एकरा की कहि धैर्य दियइ । भाए सीमान्त समरमे छइ । जोअइ छइ, की मरि गेलइ; भगवान जानथि । एक मात्र अबलम्ब माइक नई रहला सँ एकर की स्थित हेतइ ? ई यौवनोन्मुखी बाला लन्दन मे कोना रहत ?

हम बलात् मुँह पर सँ हाथ हटा—मेगी ? की कहबाक छउ ? वाज, एना जुनिकर ।

—मिस्टर गुप्त हम जे प्रस्ताव करब, जँ अत्यन्त गर्हित हो तँ क्षमा करब ।

—की तोहर प्रस्ताव छउ ?

—हम जे बजाओल.....माँ के यएह हकवाही लागल छलइ जे मिस्टर गुप्त ओटि जाय केँ अउँठी केँ पुछथुन्ह, फ्रँक कोना अछि ? ओ हिन्दू थिकाह ...

—अउँठी ला, हम चेष्टा करइ छी ।

— जँ किछु पता नई चलल, तखन ?

मोनक बात बुझि हम चुप्प भ' गेलउ तँ मेगी कहलक—

मिस्टर गुप्त ! हम पोथी मे पढ़ने छी हिन्दु बड़ सत्यनारायण होइ छथि । जँ अऊँठी केँ देखि अहाँ कहि देबइ जे फ्रँक नीकेँ अछि, जीवित अछि तँ की मिथ्या भ जेतइ ? कहइत आँखिक नोर पोछए लागलि ।

हम किछुकाल चुप्प रहि—अउँठी ला; कानि जनु अनेरे, चुप रह ।

अउँठी आनि मेगी हाथ केँ देलक ।

—मेगी ! देख आ ने माँ जागल छथुन्ह की नीन ।

कनिष्के कालमे घुरि आएल —माँ उठि गेलि । हम अहाँक अएबाक खबरि द देलिअइक ।



तखन हम वृद्धाक रोग सज्जा लग गेलउँ । हाथमे अउँठी छल । हम कहल—  
गुड मौर्निंग मिसेज क्लिफर्ड ।

अहाँक फ्रैंक कुशल अछि ।

सुनितहिँ प्रफुल्ल भ' कहलन्हि—अहाँ अउँठी देखलअए ?

हम निःसंकोच— हँ, हँ, अउँठी देखि केँ कहइ छी ।

आँखिसँ आनन्दाश्रु प्रवाहित होइत — गुड ब्लेस, गुड ब्लेस ।

आ किछुए दिन मे मिसेज क्लिफर्ड पूर्ण स्वस्थ भ गेलि ।

किन्तु, आब अपन देश अएबाक समय लगिचागेल । कएक बेर मोन मे प्रबल  
इच्छा भेल जे एक बेर लैम्बेथ जाइ आ मिसेज क्लिफर्डसँ आशीर्वाद लय आबौ  
मुदा ओ परिवार शोक-सन्तप्त छल । सीमान्त समरमे फ्रैंक मारल गेलइक ।  
खबरि हमरा मेगी आइ सँ दू मास पूर्व देने छल । हिसाब जोड़िकेँ देखल  
तँ हम जहिया अउँठी देखि कहने रहिअइ जे फ्रैंक कुशल अछि ताहिसँ पूर्व  
ओ मरि गेल छल, आ' तएँ हमरा मिसेज क्लिफर्डक सोझाँ जाइत लाज  
होअइ ।

अन्तमे हम अपन देश अएबाक खबरिएक चिट्ठीसँ मेगीकेँ द देलिअइक ।  
क्रम सँ हमर लन्दन क अन्तिम राति समाप्त भेल । हमरा आइ विदा हएबाक  
अछि । हम जाहि परिवारमे रहइ छलउँ से सभ घेरि हमरा पनपिआइ करा  
रहल छल कि एक गोटए बाहर सँ आबि बाजल—मिस्टर गुप्त ! मिस क्लिफर्ड  
आयल छथि ।

बुझ्या मे कनियो भाङ्ठ नइ रहल जे मेगी हमरा विदा करए आयल अछि ।

आबि देखल—कारी कपड़ा सँ समस्त शरीरकेँ ढाँपने मेगी ठाढ़ि छलि ।

—अहाँ आइए जाएब ?

—हँ मेगी । आइए हमर यात्राक दिन अछि ।

—देश पहुँचबामे कते दिन लागत ।

—दू सप्ताह सँ बेसी ।

—देश मे अहाँ कतए रहब ?

—पंजाब सिविल सर्विस मे — विना पहुँचने निश्चित कहब कठिन ।

—सीमान्त ओतए सँ कते दूर छैक ?

—कनिषे दूर ।



—डैरा गांजी खौं लग फोर्ट मऊरा मे प्रौकक समाधि छइ... ..कहइत  
आँखिमे नोर छलकलइ ।

—हम समाधि देखिकेँ अवश्य लिख देबइ ।

मेगीक मुख - मण्डल कृतज्ञतासँ उद्भासित भ' गेलइ । ठोर बाकि गेलइ ।  
जेब सँ एक शिलिंग बहारक टेबुलपरकेँ राखि देलक आ आहाँ जहिआ ओतप-  
जाए एक शिलिंगक फूल कीनि हमर भाइक समाधिपर पसारि देबइक ।  
भाववेश मे आँखि हमर भुकि गेल ।

सोचल एकर बड कष्टक अर्जित एक शिलिंग फिरा दिअइ, कहि दिअइ जे  
हमर देश मे फूल सर्वत्र अजस्र मात्र मे बिनु कइआक भेटइ छइ मुदा ई जे  
त्यागक एक आनन्द छइ ताहिसँ एकरा वंचित नइ करी । बड कष्ट अर्जित  
एहि शिलिंगक द्वारा जे सुख स्वच्छन्दता भ' सकइए, ई ओकरा प्रेमक नाओ  
पर समर्पण करबालए प्रस्तुत अछि । एहि सँ एकर हृदय कनेक शीतल होतइ  
एहि सँ वंचित कएला सँ कोन फल हम शिलिंग उठा लेल आ मेगी एहि  
शिलिंगक हम फूल कीनि तोहर भाइक समाधि सजा देबउक । मेगी उठि  
ठाढ़ि भ' कहए लागल-हम की कहि धन्यवाद दिअ ? नाकरीपर जेबाक  
समय भ' गेल, गुड बाइ, चिट्ठी लिखब ।

हम उठि मेगीक हाथ अपन हाथमे लेल आ'—

—गुड बाइ, मेगी ! गुड बाइ आ' ओकर हाथ चूमि लेल ।  
मेगी चलि गेल ।

रूमालसँ आँखिक नोर पोछइत बॉक्स आ ट्रंक सम्हारबा लए ऊपरकेँ बिदा  
भेलऊँ ।

—जीअब अर्थात् आनन्द नहि करब, किन्तु ईश्वरक स्तुति करब अर्थात् मानव जातिक  
यथार्थ सेवा करब ।



# हमरं यौगिक उत्तराधिकार

स्वामी शिवानन्द

सृष्टिक आदिकालसँ यौगिक विचार-धारा आवि रहल अछि । मनुष्यक उत्पत्ति सँ पहिनहु एकर स्थिति बुझना जाइत अछि । भगवान आदि नारायण महाशेष केँ शय्या पर योग निद्रा मे लीन कहल जाइत छथि ।

सत्यद्रष्टा प्राचीन ऋषिगण विश्व सृष्टिक कारण परमेश्वरक अनिर्वचनीया शक्ति माया के मानैत छथि जनिका विचित्र आचरण सँ अखण्ड सच्चिदानन्द अनेक नामरूप मे प्रतिभासित होइत छथि । गीता अध्याय ४ श्लोक ६ क

अनुसारे संपूर्ण दृश्य जगत, अपन विभिन्नता आ कन्द सहित, मायाक रचना थीक । अज्ञान, विक्षेप, मोह, आसक्ति, अहंकार, अशान्ति, कामुकता

आदि मनुष्यक जीवनमे मायाक किछु प्रगट रूप थिकैक । योग मनुष्य के एहि सभ स मुक्त होवाक तथा माया केँ वशीभूत करवाक योग्य बनबैत अछि जाहिसँ हम सभ संसारे मे ओभरायल ने रहि जाइ ।

माया पर विजय पाबक हेतु अविरत सत्य असत्यक चिंतनक संगे अपना केँ बराबरि पूर्ण तथा व्यापक बुद्धिवल ज्ञानक स्थिति, समता, एकाग्रता, विरक्ति आदि मुख्य विधि मानल जाइत अछि । एहि पथ पर अग्रसर होवाक हेतु ज्ञान, ध्यान, भक्ति, प्रेम, निस्वार्थ कार्य आदि प्रमुख साधन मानल जाइत अछि ।

योगक अर्थ थीक परम शुद्ध भऽ गेनाइ, पूर्ण भऽ गेनाइ, जे मनुष्यक वास्तविक स्वरूप थिकै । तँ जे अपवित्रता ओकरा घेरने रहै छै तकरा हटायब, बाहर क कोश क बेसुर तरंग केँ रोकब, तथा पूर्ण समता आ शान्ति केँ स्थापित करब आवश्यक ।

विचित्र शक्ति क क्रीड़ा मे पकड़ायल तथा चकित करैबला दृश्य जगत केँ देखि, मनुष्य ओकरा बुझवाक तथा एकरा बश मे अनवाक प्रयत्न करैत अछि संसारक गति विधिक चक्र मे चकर घूमैत अपन यथार्थ दिव्य स्वरूपकेँ

विसरल, प्रकृतिक विभिन्न कोष स भांपल एक अत्यन्त सीमित चेतना लऽ



માનવ અપના સીમા કે, નિયંત્રણ કે, અપૂર્ણતા કે હટાવક હેતુ પ્રયત્નશીલ રહેત અછિ । જે દુઃખમય, અપ્રિય બંધનકારક અછિ તકરા છોડિ સુખ આર સ્વતંત્રતા ક સ્મરણ કરેત અછિ । મનુષ્ય ક અન્વેષણ તથા પ્રયાસક સમ સં સફળ આ સંગઠિ યુક્તિસંગત સમાધાન યોગ સં હોઈત અછિ । વાસ્તવિક જીવનક આવશ્યકતા કારણ પ્રાદુર્ભાવ મેલા સં, યોગાભ્યાસ, યોગશાસ્ત્ર અપના અન્વેષણ કે રાસ્તાક બાધા પર વિજયી હૈવા મે સહાયતા દય મનુષ્ય ઠીક આર શીઘ્રતા સં અપના આદર્શ પર પહુંવા દૈત અછિ । મનુષ્ય ક સર્વશ્રેષ્ઠ આવશ્યકતાક પૂર્તિ હોઈયે યોગસં ।

પ્રતિજ્ઞણ સમ્પૂર્ણ માનવ જાતિ અનાયાસ, નિશ્ચય અપન આદર્શપૂર્ણ તાક દિશ બદલ જાઈત અછિ । સમ્પૂર્ણ સૃષ્ટિ એક સં અનેક હૈવાક, હ્રદય કે હરય હેવાક, પ્રકટ હેવાક વિધિ થીક । શુદ્ધ ચેતનાક અસ્વણડ, અનન્ત સાગર મે સમ્પૂર્ણ વિશ્વ ઉત્પન્ન હોઈત અછિ, રહેત અછિ તથા ઓહીમે લીન મડ જાઈત અછિ । પરમાત્મા ક સમ પ્રાણી વૂસૂ તડ સ્વાસ પ્રસ્વાસ થીક । જહિના અસંખ્ય કરોડો ઢેહુ મહાસાગર ક વક્ત્રસ્થલ પર ઊઠિ, નાચિ, વિલીન મડ જાઈત અછિ તહિના શ્રુષ્ટિ પ્રારમ્ભ મેલા સં એકહિ સત્તા સં અસંખ્ય પ્રાણી નિકલિ જીવનક અગણિત રૂપ સં ક્રોડા કરેત અછિ જે હમ સમ દેખૈત છી । એવહિ સં વિકાશ ક ઓ યાત્રા પ્રારમ્ભ હોઈત અછિ જાહિ સં જીવાત્મા અપન મૂલ પરમાત્મા મે મિલૈત અછિ । યૈહ ર્ષ્વરેચ્છા સં શ્રુષ્ટિ, વિકાસ આર લય એવહિધરિ કેર મહાવિધિ થીક ।

[ શ્રીવેદાનન્દક્ષા એમ્.એ. દ્વારા પ્રસ્તુત ]



# हफ्तीम

## श्रीराजकमल

[विदेह - ग्रामक वृद्ध जमिन्दार बाबूसाहेब चौधरि आपन दलान पर नेवार'क खाट पर सूतल छथि । सरकार काँगरेस - बहादुर जमिन्दारी छीन लेलथिन तँ अधिकाधिक समय पूजा - पाठ आ धर्म - चर्चामे बितबैत छथि । वयस छनि पचपनसँ सत्तरि धरि, मुदा पुछलासँ कहै छथिन इएह आसिनमे चालिसम पूरल अछि । रंग असली सिलेबिया, दुम्बर - पातर, खिसिआएल कुकूर सन चेहरा - मोहरा । ओछाओन पर सूतल एहने लगैत छथि जेना घूड़मे जरल जामुनक ठारि होथि । साँभ भरल अछि । स्कूल सँ, गाम दिसि पढ़ाइत नेना जकाँ सूर्य्य क्षितिज दिस दौगल जाइतछि ।

अकस्मात् बाबू साहेब चौधरि चिचिआक खाटसँ, नीचाँ उतरि जाइत छइथ । पुनः अलसाएल दृष्टिँ चारु कात ताकि, आँखि मीड़इत खाट पर बैसैत छथि ।]

बाबू साहेब—खवास ! औ खवास ! ( कनिँ जोर सँ ) हे गै, कुलमतिआ छँ गै ! एह, किओ नई सुनइए, ककरो हबेलीसँ छुट्टी होइ तखन ने हमर गप्प सुनत..... ( जेना कोनो बहुत पैघ गप्प मोन पड़ि आएल होइन ) आरि-वा, आइए त पूर्निमा थीक । आइए अगहनी पूर्निमा थीक । काशीबला जोतषी कहने छल, हमर कुण्डली देखक' कहने छल जे.....अगहनी पूर्निमा' दीन हमर देहान्त हएत ! वाप रे, ( खाट सँ कूदि जाइत छइथ ) नई, हम आइ नई मरि सकइत छी । कहू तऽ एहनो भेलइए । स्वयं जमराजो अपता, तऽ हम नई जएबइन । एखन हमर वयसे की भेल अइछ ! एह, आइ साँभमे सरूपा नटुआ'क बेटा ड्यौड़ीमे नाच कर'त । केहेन दिब नचइए सरवा ! आ गबइए कोनाँ डाँड़ लचका - लचका कऽ... ( गाब लगइत छइथ ) 'हम से ने भरा जाए हो, राजा तोरी पनियाँ ! हमसे न भरा जाए हो...!' ) आ सोलहो सिंगार-पटार क' क' जखन समियानामे अवइत'छि तऽ...नई, नई आइ हम नई मरि सकइ छी ।



[एतबेमे भीतर सँ भरल घइल पानि नेने बाइस - तइस बरख'क हृष्ट - पुष्ट, उखरि सन देहवाली फुलमतिआ खवासिन अबइत'छि । फुलमतिआ खवासिने-टा नई, बाबू साहेब चौधरि'क मनेजर सेहो । फुलमतिआ'क चलबामे एकटा विचित्र भाकर्षण छइक, जेना कोनों मद - मत्त हस्तिनी हस्तिनापुर'क हथिसारहिमे चलि जा रहलि हो । घइल कोनमे राखि बाबू साहेब लग आवि ठाढ़ होइत'छि ।]

फुलमतिआ—सरकार, साँझ पढ़ि गेलइ ! मुँह - हाथ धोएबा लेल जल अनने छी ।

बाबू साहेब—आइ सँ तों हमरा सरकार जुनि कह फुलो ! हम आव जा रहल छी ।

फुलमतिआ—कत्तऽ सरकार ! अपने कत्त' जा रहल छी ? हमरो संगे नेने चलू.....

बाबू साहेब—हँसी नई कर फुलो ! हम एहि पृथ्वीपरसँ जा रहल छी । आइ हम मरि जाएब ।

फुलमतिआ—सरकार ! ( हँसइत'छि, हँसिते रहइत'छि ) अपने कखन मरबइ ?

बाबू साहेब—आब कनिहँ कालमे मरि जाएब मुदा तों हमरा मरबाक समय किअएक पूछइ छें ?

फुलमतिआ—सरकार, आसा - दाइ के हुकुम छइन । गाछी जा' क' आम तोड़एबाक अइछ । आइए पटनासँ ओम्हाजी अएथीन ने । हमरा घुरबामे देरी हएत तई पुछइ छी.....

बाबू साहेब—( उत्सुकता ) अएँ फुलो ! जँ हम मरि जाएब सभटा माल-दह, बम्भइ, किसुनभोग, खजबा, काशीपाक आने खा जाएत ?

फुलमतिआ—( हँसिते ) हँ, मालिक ! सराधमे पंडित - बरामहन खएताह तइओ जँ बचतइक त' हम खाएब ।

बाबू साहेब—ठीके कहलें गइ ! तहुँ खइहेँ, मुदा आम'क सुवाद तों नई बुझबिही । मलदह'क कलम हम बिलाएत सँ मँगओने छलउँ । अपना देसमे कि एहेन फल होइत छइक ! सभ नीक चीज त' बिलाएतमे चल गेलइ.....



फुलमतिआ—सरकार ! अपने लोकनिक संघतिमे आव हमहूँ सभ ई गप्प  
बूझऽ लगैलिअइए ।

बाबू साहेब—( हँसिक ) तू किअएक नई बुझबिही गइ ! विदेह ग्राम'क  
ड्यौढ़ीमे रहइ छें.....

फुलमतिआ—( कन्हुआए क' ) ड्यौढ़ीक नाम जुनि लिअ', मालिक ! ड्यौढ़ीए  
मे त' हमर जिनगी खराप भ' गेल । अही सभ'क कारनें  
जातिओ सँ निकालि देल'क, इज्जतिओ दुरि गेल... ( कानइक  
भाभट करइत'छि )

बाबू साहेब—( चिकरि क' ) फुलमतिआ ! तू बुझइ छें जे हम आइ मरि  
जाएव, तई ई घाना पसारइ छें ? ई सभ बजबें तऽ हम पहिनें  
तोरे जान मारि देवउ, तखन अपने मर'व !

फुलमतिआ—( कनइत ) सत्ते हमरो मारि दिअ' सरकार ! अहाँक बिना  
हमही जीवि क' की करब.....

बाबू साहेब—( प्रसन्न होइत ) नई फुलो ! तौं किअएक मरबें । हमरे मरि  
जाए दे । आइ हमर मरबाक दीन आवि गेल अइछ ।

फुलमतिआ—( आँचर सँ नोर पोछि क' ) सरकार, जँ सत्ते मरबाक मोन  
अइछ त' से कहू । ओना त' अहाँ निते कहइ छिअइ जे आइ  
मरव, कालिह मरव । छोटकी मलिकाइन नित्य ब्रह्म - बाबा के  
थानपर परसाद चढ़वइ छइथि जे अहाँ छठि जाउ, मुदा अहाँ  
त' अपनई ब्रह्म छी.....( बड़ी काल धरि खिल-खिल हँसइए )

बाबू साहेब—नई फुलो ! आव हम एखनहि मरि जाएव । काशीबला  
जोतपी केँ वचन फूसि नई हएवाक चाही । तौं गाम भरिमे  
कहि दही ग'.....

फुलमतिआ—मरबाक अइछ, तऽ भट ब' मरि जाउ, सरकार ! जँ बेसी  
राति भ' जाएत त' घाट पर ल' जाइमे, जरएवामे बहु कठिन  
भ' जएतइक । भ' सकइए राति भरि अहाँ के जरएवे नई करत,  
तखन त' सरकार, राति भरि जाइं कठुआइत अहाँ सड़िते  
रहि जाएव ! ( हँसइए )



बाबू साहेब—ठीक कहइ छें फुलो ! हमरा शीघ्रे मरि जाएबाक चाही । फुलो !  
हम प्राणायाम सँ प्राण घीच क' ब्रह्माण्डमे ल' जाइ छी । तों  
हमरा उजरा चहरि ओढ़ा दे । हम योग-क्रियासँ मरब ।

फुलमतिआ—सरकार ! जोग - किरिया सँ कोनाँ मरबइ ?

बाबू साहेब—सभसँ नीक मरब अहिना होइत छइक । समाधि लागि जाएत ।  
ब्रह्माण्डके फोड़ि प्राण बहरा जाएत । हमर पितामह सेहो अही  
क्रियासँ मरल छलाह ।

फुलमतिआ—मुदा, सरकार ! आन लोक सभ त' बजइत छइथ जे अहाँक  
पिता हुनकऽ कपार फोड़ि देलथिन आ ओहीसँ अहाँक  
पितामह.....

बाबू साहेब—देख फुलो ! एना हमरा बाप - पितामह केँ उकटा - पैंची  
जुनि क'र ! कालिऽए ने तोरा नब नूआ कीन देने छिअउ ?  
तखन ई सभ किअएक बजइ छें । जँ कोनों दरोगा केँ ई बात  
बूझमे आबि गेलई.....

फुलमतिया—सरकार ! एहनो भेलइए । हमरा पेट सँ कोनो गप्प बहार नई  
भ' सकइत'छि । आ मालिक, अहाँनूआ-बस्तर नई देब, त' आन  
के देत ?

बाबू साहेब—( प्रसन्न भ' क' ) नीक ! बड़ दीव । बाह, फुलो ! आई धरि तूँ  
यएह एकटा गप्प सत्त बाजल छें । फुलो ! तूँ हमर छें, ई हबेली  
हमर थीक, एहि हबेलीक सभ स्त्री-पुरुष हमरे टा थीक ! हो...  
ही... हमहूँ एक तरहक छोट छिन... ( हँसइत छइथ )

फुलमतिया—( स्वगत भाषण क' रूपें ) सभ अहाँक थिक, मुदा सभ अहाँ  
क हेतु नई ! हम अहाँक आँगन मे अहाँक नेवारक खाट पर  
फरकल बाँहि तर कनइत रहइ छी, मुदा हमर बेटी... नई हमर  
बेटी अहाँक नई रहत ।

बाबू साहेब—( अऊँघाइत सन ) की बजइत छें गो फुलो ? के नई रहत ?

फुलमतिया—( मुँह मे आँचर दूँसि क' हँसइत'छि । बहुत काल धरि हँसिते  
रहइत'छि । हँसला सँ माथ क' आँचर नीचा ससरि जाइ त



छद्मक, तकरा चढान लगइत छि त बाबूसाहेब हाथ पकाइ क बह  
सिनेदूरी 'लग धीच' लगइत छथीन । फुलमतिया छोड़ाव' लग-  
इए ।) गानिक हाथ छोड़, आन हँसीक बेर नइए । अहीकेँ तउ  
जोग-किरिया करनाक अइछ ने ?

बाबूसाहेब—(फुलमतियाक हाथ भन्ना द छोड़इत ) हँ, हँ थोसिक क्रिया कर-  
इए पड़त । भाइ नइ जीमि सकइ छी सरबे करब जगन जोसपी  
कहि देने अइछ तखन आन बाँचबाक कोनो संभावना नइ ।

फुलमतिया—अबछा त सरकार । आपने संतर - संतर करूँ । हम दूबेजीमे  
समाद द जानइ छी..... ।

[ फुलमतिया क जाइते बाबूसाहेब फक - फक कनइत ओझाओन पर चित्ते  
खसि पड़इत छइथ आ दू बेर करोट फेरि रेसमी चहरि ओढ़ि सूति रहइत  
छइथ । कनी कालक पछाति गान लगइत छइथ—

हे मोन ! चलाह सुरधाम  
भेटतह सभ तरहक आराम  
सरनसि-रम्भा पर दबओती  
तिलोत्तमा नच गीत सुनओती  
मत्त मोनका नाच देखाओती  
बनि जएगह तौ श्याम  
हे मोन चलाह सुर-धाम  
हे मोन चलाह सुर-धाम  
चलाह सुर-धाम  
हे मोन !  
हे मोन !  
चलाह सुर धाम.....  
सुर धाम.....

गीत गबिते गबिते फोंफ काट लगइत छइथ । कनिँ कालमे दू तीन गोटेक  
बजबाक शब्द नगीच आन लगइत छइक । तखन एकटा बेस नीक धोधिवाला  
• बयोधुर महोपाध्याय बाबूसाहेबक ज्येष्ठ पुत्र ( बएस करीब पचीसम ) अमर-



कान्त, बाबूसाहेब'क बेटी आशा दाइ आ पाछू - पाछू चिचिआक कनबाक भयावह उपक्रम करइत फुलमतिआक प्रवेश ! ]

अमरकान्त—( हड़बड़ाएल सन ( बाबू, सत्ते हमरा सभ केँ छोड़िक चल गेलउँ औ ? फेर बहीन दिस ताकि क नहुँएँ सै' ) आसा, बाबू सत्ते मरि गेलथुन । अइ बेर बचबाक कोनो आसा नई.....

आशा—( अमरकान्तक लग अबइत ) एना जुनि बाज भइआ । बाबू क कोन ठीक नई ! कठिआरिओसँ घूरि जा सकइत छइथ ।

अमर कान्त—( बापक छातोपर हाथ रखइत ) नई, नई, सत्ते मरि गेल छइथ । चल' छुट्टी भेटल.....

महापात्र—( आगू अबइत ) अमरकांतबाबू, आबहु पिताकेँ गोदान करबाउ । नई तऽ प्राण बइतरणिए मे लसकल रहि जेतइन...

आशा—एह, आब गोदानसँ को लाभ ? ओत, कखने ने मरिओ गेलाइ !

महापात्र—( क्रोधित भ क ) इह ! अहुँ बड़ विचित्र गप्प कहइत छी ! गोदान नई हेतइन त ककर नाँगड़ि पकड़िक बइतरणी पार हएताह ? नाना प्रकारक जीव जन्तु-प्राण ल लेतइन...

अमरकांत—( हंसइत-हँसइत ) अहाँ त महापात्र ! जँ, जँ बूढ़ भेल जाइ छी, बूढ़िओ तेहने भेल जाइ छी । आत्मा त अविनाशी थीक, निराकार थीक, ब्रह्मक अंश थीक ! आत्माकेँ कोन कष्ट हेत-इक ?

महापात्र—( खऊँझाइत ) हेओ बाबू । ई सभ धर्मक गूढ़ गप्प अहाँ हमरे सभ पर रहऽ दिअ' ।

अमरकांत—( गप्पकेँ बिच्चेमे लोकइत ) से किएक ? हम की ब्राह्मण नई छी ? हमरा की संध्या-गायत्री नई पढ़ने छी अबइए ? हम की-वेद पुराण नई पढ़ने छी ? हम की धर्मक मर्म नई बुझइत छिअइक ?

आशा—हँ, भइआ ! बेकारे गोदान-फोदानमे किअएक पइसा जिआन कएल जाए ?

फुलमतिआ—( कनइत ) हँ, हँ, उचिते कहइ छी । अहाँ दुन्नू भाइ बहीनकेँ आब मरल बापसँ कोन काज अइछ । बाबूसाहेब त मरिए गेलाह, हुनका लेल किअएक एक्को पाइ खरन्ना करब ?



आशा ——— ( चिचिआक ) अहाँ किछु नई बःजू फुलो-रानी । आब बाबूक राज गेलइन । ओ भने अहाँ के पटोर पहिराक पटरानी बन-ओने छलाह मुदा हमर भइआ तेहेन नई अइअ । ओ अहाँक बोल नई सहत से जानि लिअ । अप्पन ई सभ भाभट आब समेटिए क राखू !

महापात्र ——— किअएक फुलमतिआकेँ छंटइत छिअइन ? ठीके त कहि रहल छइथ ।

अमरकांत — ( महापात्रक गरदनि उछलिक पकड़ि बाहर दिस धकिआब-इत ) तुस्त एत सँ भागि जाउ । अहाँक कोनो काज नइएँ । जहाँ ककरो मरबाक गप्प सुनलइन कि भट द बिनु बजओनहि जुमि गेलाह ! सार...

महापात्र — ( गरदनि छोड़एबाक असफल प्रयत्न करइत ) देखू अमरकान्त ! गारि जुनि दिअ । हम अपनई चल जाइछी । मुदा जखन बाप क भूत राति मे अहिना गरदनि पकड़त तखन बुझबइ ( बाहर पड़ाइत'छि )

आशा ——— भइआ ! ई काज नोक नई भेल । गरीब ब्राह्मण केँ बेकार मारलिअइक । बेचारा के आशा लागल हेतइक जे बाबूसाहेब मरताह त दूटा पाई हएत । एह द दितिअइक किछुओ...

अमरकांत — नई आसा ! आहाँ एहि सभ गप्प मे जुनि बाजू । ई भिखमंगा सभ केँ हम नई देबइ । बाबू कत्ते परिश्रम सँ कत्ते जाल आ बइमानी सँ धन अरजलनि से हम नष्ट नई करब !

आशा ——— से किअएक ? आहाँ अपना हिस्सा मे स नई देबइ त जुनि दिअउ । हमरे हिस्सा स सबटा टाका द दिअउ ।

अमरकांत — अहाँ एखनहि सँ हिस्सा - बखराक गप्प कर लगलऊँ ? तखन सफा - सफी सुनि लिअ अहाँक कोनो बखरा हमरा संपत्ति में नई हएत ।

आशा — ( जल जल करइत ) इह ! अहाँ पंचैती करा क देख लिअ । इह हमर बखरा नई हएत । सभटा दिनके हेतैन । बडू चलाक छइथ ।



अमरकान्त—अच्छा । सेहो देख लेब । बाप क धनमे बेटीक कोनो हिस्सा नई होइ छइक । अहाँ न्यायक गप्प किआ ने गेलिअइ ।

आशा—किअएक ? हम हुनकर जनमल नई छी की ? अहाँ बेटा छिअइन तऽ हमहुँ बेटी छिअइन ? अहाँ खेत-पथार ल लिअ । हम रूपइया ओ गहना लेब । अहाँ नोकर-चाकर ल लिअ हम नऊँड़ी-खबासिन लेब । अहाँ...

अमरकान्त—(चिकरइत) अहाँ केँ हम किछु नई देब । एकटा फूटल अद्विओ नई देब । अहाँ हमर की क लेब ?

फुलमतिआ—( दुन्नूक बीचमे ठाढ़ होइत ) धन्न छी अहाँ दुन्नू भाइ-बहीन । सोभामे जन्म देनहार बाप मरल पड़ल छइथ आ अहाँ हिस्सा-बखरा लेल भगड़ा करए छी ? छी: छी: ...

आशा—हम सभ भगड़ा करइ छी तइ सँ तोरा की छउ ?

फुलमतिआ—( ई देखि क जे बाबूसाहेबक टाँग हिल रहइ ) छइन अमरबाउ, आसा-दाई, अहाँ सभ जे भगड़ा करब त...

अमरकान्त—भगड़ा करबे करब त की ?

फुलमतिआ—( जोर - जोर सँ हँसइत ) अहाँ सभ भगड़ा करब त हम बाबूसाहेब के जिआ देबइन

आशा—इह, यएह असली हे कलजुगक सावित्री ! मरल लोक के जिआ देथिन...

[ फुलमतिआ अकस्मातेँ पानिक घइल उठाक सूतल बाबूसाहेब'क देह पर ढारि दइत छइन । चेहा क धरफड़ा क बाबूसाहेब उठइत छइथ आ ठाढ़ भ जाइत छइथ । आशा ओ अमरकान्त त सकदम्म ! फुलमतिआ हँसइत'छि ]

बाबूसाहेब—( इम्हर-उम्हर तकइत ) अहाँ सभ एत किअएक ठाढ़छी । आँगन जाइ जाउ । ( फेर नाटक देखइत जनता दिस ताकि ) ओ आहाँ सभ किअएक बइसल छी अप्पन - अप्पन गाम गेल जाओ । नाटक आव समाप्त भ गेल । हँ, हँ ठीके कहइ छी । ई प्रहसन समाप्त भ गेल । आव ने एहेन हफीम खाइबला एको टा बाबूसाहेब मिथिला मे छइथ । आ ने एको टा हुनकर फुलमतिआ सन खबासिन आ ने अमरकान्त आ आशा सन बेटा-बेटी...

( सभ केँ हाथ जोड़ि क प्रणाम करइत छइथ ! )



# फर्रुखवार तथा मंगरौनी

श्रीगिरिधरभा

अपना मिथिलामे इतिहास लिखबाक परिपाटी नहि रहलाक कारण फतेको महान् मनीषी विद्वानक परिचय लुप्तप्रायः भए गेल अछि वा भए रहल अछि। एही कोटिमे हम फर्रुखवार मूलक हेतु कहि सकैत छी जाहिमे अनेकानेक दिग्गज विद्वान तथा सिद्ध-पुरुष सभ भए गेल छथि जनिक जोड़क प्रकाण्ड विद्वान तथा सिद्ध भेटब कठिन अछि।

हम एहिठाम ओहि विद्वान लोकनिक विद्वताक विषयमे चर्च करए नहि उपस्थित भेल छी किन्तु हुनका लोकनिक संक्षिप्त परिचय देमय चाहैत छी जे ई फर्रुखवार लोकनिक के थिकाह? कतय कोना रहैत आएल छथि तथा मंगरौनी गामसँ हुनक घनिष्ठत्वक की अभिप्राय अछि आदि।

फर्रुखवार तथा मंगरौनी गामक घनिष्ठत्व एतेक बढ़ि गेल अछि जे एक दोसरा केँ पृथक नहि कएल जा सकैत अछि। दूनूक गौरव एक दोसरा केँ लइए केँ अछि।

महामहोपाध्याय रामभद्र उपाध्याय अपन पूर्व डीह खनाम सँ उपरि मंगरौनीमे बसलाह। एहूमे एक छोट रोचक इतिहास अछि। खनाम गाम कपिलेश्वर स्थानक समीप छल। रामभद्र उपाध्याय भौरा गढ़ीमे दरबारी पंडित छलाह।

चतुरमास (वर्षा समय) मे हुनका तथा तात्कालिक महाराज दूनू केँ बड़ कष्टक अनुभव होइत छलन्हि। कपिलेश्वर तथा भौराक बीच नदीक उदण्ड प्रवाहक कारण पंडितजी कलनहुँ जँ गामे रहि जाइत छलाह तँ भौरा दरबार जाएब कठिन भए जाइत छलन्हि। नहि दरबारे रहि जाइत छलाह तँ गामे जाएब दुर्ग भय जाइत छलन्हि। अन्ततोगत्वा पंडितजीकेँ नदीक एहि पार वास हो एकर अन्वेषण होमय लागल बड़े यत्न तथा शिष्टताक संग ओ एही मंगरौनी गाममे धसाओल गेलाह तथा एहि गामक वासी गंगा किनार जाए बैस गेलाह जे लोकनि



मङ्गरय मंगरौनी हकपाड़ा ब्राह्मण कहवैत छथि जकरा हमरा लोकनि 'सगोवगो' कहैत छी । एकर अन्तिम चिन्ह स्वरूप कचहरी पोखरि छल जे सम्प्रति महाराजी अकादरुण पोखरीक पेट सर्वग्रास कए लेलक अछि । ई पोखरिसँ मंगरौनीक अनेक प्राचीनतम गौरवक हास भए गेल अछि ।

हँ, महामहोपाध्याय रामभद्र उपाध्याय मंगरौनीमे वसाओल गेलाह आर एकर नाम मंगलवनी राखल गेल । सभ तरहें मंगल-युक्त ई गाम भए उठल । एहन रमणिक वास एहि गामक छल जे सभक मन मुग्ध कए लइत छल । एखनों विचारि देखल जाइत अछि तँ एहि रमणीयताक भान भए जाइत अछि । उत्तर, पूर्व, तथा दक्षिण तीन भाग जलाशय सँ वेष्टित जकाँ केवल पश्चिम दिश स्थलसँ जुटल जकाँ । बेस गढ़ी जकाँ बुझाइत छल । सम्प्रति महाराजी पोखरि भेने ई चिन्ह बहुत किछु लुप्तप्राय भए गेल अछि । सम्पूर्ण वस्ती गढ़ी बुझाइत छल एहि गामक पश्चिमे सभ उद्यान देखि सकैत छी एक भाग लगाक । मंगरौनीसँ भौरा गढ़ी धरि सुन्दर सड़कक निर्माण कराओल गेल जे अद्यावधि धरि 'रजवान्ह' सँ प्रसिद्ध अछि । ई सड़क विगत वर्षक कमलाक बाढ़ि सँ जीर्ण बना देल गेल अछि तथापि रांटी होइत भौरा धरि चल गेल अछि । एहि सड़कक ऐतिहासिक महत्व अछि जे स्थाना-भावक कारण दिग्दर्शन नहि कराओल जा सकैत अछि ।

मंगरौनी आवि रामभद्र उपाध्याय बड़े आनन्दसँ जीवन वितावए लगलाह । उपाध्यायजी कपलेश्वरक परम भक्त छलाह । कपिलेश्वर हुनका स्वप्न देलथिन्ह जे तौ श्रीकान्तभा नामक अमुक गामक जे हमर भक्त अछि ओकर अमुक कन्यासँ विवाह करह ओहिमे तोहरा शंकर रूप पांच-पुत्र रत्न उत्पन्न हेतहु । ई श्रीकान्तभा ब्राह्मण जयवार मूलक छलाह किन्तु पछवारि पारमे श्रीकान्तभा पांजिक आविर्भाव एहि जयवार मूलक ब्राह्मणक नामसँ चलल । ई जयवारक जयवारे रहलाह किन्तु हुनक नामसँ प्रचलित नाम श्रीकान्तभा पांजि उच्चमे गनल जाए लागल । रामभद्र उपाध्याय स्वप्नक अनुसार विवाह कएलन्हि ।



म० म० रामभद्र उपाध्यायक पितामहक नाम छलन्हि वामेन्द्र सन्यासी महामहोपाध्याय रुचिभा । हिनक बालक भेलाह महामहोपाध्याय निकारभा । ई पिता-पुत्र एक सँ एक सिद्ध तथा दिग्गज विद्वान भेल छथि । लेख बृहत्काय नाहि हो तए हुनक विषयमे बेसी नहि कहैत छी । निकार भाक बालक रामभद्र उपाध्याय केँ यथा समय शंकरक कथानुसार पांच पुत्र रत्न भेलथिन्ह तथा एएह पांचोसँ फन्नेवार कुलक पसार चतरी साग जकाँ चतरि गेल ।

प्रथम पुत्र मधुसूदन उपाध्याय छलाह हिनका दू पुत्र रत्न भेलथिन्ह— प्रथम एएह भगवती पुत्र मदन उपाध्याय जनिका विषयमे अनेकानेक अघटित घटना सभक वर्णन सुनैत छी । हिनके धोती आकाश मे सुखाइत छल । ई सिद्धपुरुष छलाह देश-देशान्तर मे हिनक नाम छल । दोसर पुत्र बलदेव उपाध्याय छलथिन्ह, हिनके वंशज लोकनि सम्प्रति खोजपुरमे छथि तथा मंगरौनी मे सेहो छथि राधानाथ भा तथा दोनानाथ भा लोकनि ।

रामभद्र उपाध्यायक द्वितीय पुत्र छलाह पीताम्बर उपाध्याय । हिनका चारि पुत्र रत्न भेलथिन्ह—प्रथम अचलांबु सरस्वती पदांकित महामहोपाध्याय त्रिलोचन उपाध्याय हिनके पुत्रय छलाह । प्रसिद्ध महामहोपाध्याय राघव उपाध्याय तथा म० म० भास्कर उपाध्याय हिनक पुष्करणीक कथा बुझले हएत ।

पीताम्बर उपाध्यायक दोसर पुत्रक नाम छलन्हि—म० म० दण्डपाणि उपाध्याय । तृतीय पुत्र छलथिन्ह एएह प्रसिद्ध टीकाकार महामहोपाध्याय गोकुलनाथ उपाध्याय । हिनक विद्वताक जतेक प्रशंसा कयल जाय ततेक थोड़ । हिनका दू पुत्र—रत्न छलथिन्ह—प्रथम सर्वस्व दाता महामहोपाध्याय रघुनाथ उपाध्याय । ई तीन बेर सर्वस्व दान कएने छलाह । एक दश व्यक्तिक पारिवारिक भरण-पोषण योग सभवस्तु दए मकान इन्नार आदि बनबाए दान कएने छलाह । तीनू बेर अपने परिवार सहित कौपीन पहीर घरसँ बाहर भए गेल छलाह । हिनक विषय मे अनेक चमत्कारिक घटना सभ कहल जाइत अछि । दोसर भाइ छलाह म० म० लक्ष्मीनाथ उपाध्याय ।



म० म० रघुनाथ उपाध्याय के तीन पुत्र छेलथिन्ह—म० म० कृष्णदत्त का दोसर म० म० (प्रसिद्ध) दत्त उपाध्याय विष्णुदत्त उपाध्याय (विष्णुदत्त का) । हिनके खुनाओल नबीपोखरि तथा दतेश्वर नाथ शिवलिंगक मन्दिर अछि । तेसर छलाह म० म० भवानीदत्त उपाध्याय । हिनका सात पुत्र तथा एक कन्या जाहि कन्याकेँ गामेमे बसौलन्हि । श्रीजिकुलक नरौने सोढ़नी मूलक प्रसिद्ध भैरवदत्तकासँ व्याह करवा डेढ़ सए विद्या जमीन दए बसौलन्हि । एही मे लेखक पांचम अवैत छथि ।

भवानीदत्त उपाध्याय केँ सात बालकमे सभसँ ज्येष्ठ छलाह म० म० शंकरदत्त का हिनक पश्चात् एहि वंश सँ विद्याबोप भय गेल । इएह अन्तिम उपाध्याय छलाह । एहूमे एक कथा अछि जे ई जगन्नाथपुरी जाय विदाइ धोती अन्ने छलाह । मिथिलासँ गेल छलाह एहीपर कहल गेलन्हि जे जगन्नाथ किओ नहि आवह तथा तोहरा घरसँ आव विद्या चल गेलह । एहि सातो भाइ क वंशज सम्पूर्ण मंगरौनी ने सपरल छथि ।

तसर पुत्र भेलथिन्ह उमानन्द उपाध्याय । हिनका दू पुत्र भेलथिन्ह म० म० धमश्वर का तथा म० म० गुणीश्वर का । गुणीश्वरकेँ वंश चललन्हि । एहि वंशक फन्नेवार लोकनि पिलखवार मे छथि । एहि कुलमे एक प्रसिद्ध सिद्ध भेल छथि गोसाईं धारानाथ का ।

रामभद्र उपाध्यायक चतुर्थ पुत्र भेलथिन्ह बागीश उपाध्याय । जनिका दू पुत्र भेलथिन्ह—म० म० गिरिधर का (प्रसिद्ध लाल) तथा म० म० महीधर का । म० म० गिरिधर काकेँ पुत्र भेला—प्रसिद्ध म० म० धीरेन्द्र का जनिक चातुश्वरणी पोखरीक कथा जमसमक प्रसिद्ध अछि ।

रामभद्र उपाध्यायक पाँचम पुत्र भेल छथि त्रिदंडी सन्यासी म० म० रतीश उपाध्याय । हिनक पुत्र भेल छथि म० म० उमानाथ का एक पीढ़ीक पश्चात् इहो वंश लुप्त भए गेल ।

मिथिलेक कोन कथा सम्पूर्ण भारतवर्षमे एहि तरहक कुल प्रायः कतहु देख्य मे नहि अवैत अछि, जाति मे एक नहि अनेक उद्भट विद्वान भए गेल छथि । दश - दश पीढ़ी तक महामहोपाध्याय भेटब एक अतीत गौरवक ज्वलन्त उदाहरण अछि । हमरा लोकनि एहि फन्नेवारक इतिहास देखला स पवैत छी, एहसँ एक सिद्ध पुरुषो एहि वंश मे भेल छथि । साक्षात् जगदम्बाक अनुकम्पा छल, से एतए कहक पड़ैत अछि । महाराजी पोखरि सँ अनेक प्राचीनताक अवशेष एहि मंगरौनी गामसँ नष्ट भएगेल अछि ।



## सार्वजनिक सूचना

समाचार-पत्र ( वैदेही, दरभंगा ) के सम्बन्धमें एकर प्रभुत्व एवं अन्य विवरणक वर्णन जे प्रत्येक वर्ष फरवरीक अन्तिम दिनक अनन्तर प्रथम अंकोमे राजकीय आह्वानुसार प्रकाशित कैल जात ।

फार्म ४

[ नियम ८ देखू ]

१. प्रकाशन स्थान ... दरभंगा
२. एकर प्रकाशनक नियमित समय ... मासिक
३. मुद्रकक नाम ... श्रीकृष्णकान्तमिश्र  
जातीयता ... भारतीय  
पता ... वैदेही समिति, दरभंगा
४. प्रकाशकक नाम ... श्रीकृष्णकान्तमिश्र  
जातीयता ... भारतीय  
पता ... वैदेही समिति, दरभंगा
५. सम्पादक-मण्डलक नाम ... प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा 'सुमन'  
... श्रीसुधांशु 'शेखर' चौधरी  
जातीयता ... श्रीकृष्णकान्तमिश्र  
पता ... भारतीय  
... वैदेही समिति, दरभंगा
६. समाचार-पत्रक स्वामी एवं हिस्सेदार अथवा सम्पूर्ण मूलधनक एक प्रतिशतसँ अधिकक शेयर राखैबलाक नाम व पता ... श्रीकृष्णकान्तमिश्र, मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा
७. हम, श्रीकृष्णकान्तमिश्र, एहि द्वारा घोषित करै श्री कि उपर्युक्त देल गेल विवरण हमरा ज्ञान एवं विश्वासक अनुकूल सत्य थिक ।

ता० १-३-१९५८

ह० श्रीकृष्णकान्तमिश्र

प्रकारकक हस्ताक्षर